ISSN 2349-638x
IMPACT FACTOR 8.02

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal

Peer Review and Indexed Monthly Journal
Website :- www.aiirjournal.com
Email:- aiirjpramod@gmail.com

SPECIAL ISSUE

on

"साहित्य संस्कृती आणि सामाजिक शास्त्रे यातील समकालीन विचार व समस्या"

Feb. 2024

Chief Editor

Dr. Pramod P. Tandale

Executive Editor

Dr.Bapurao V. Andhale
Dr. Anant B. Sarkale
Dr.Anil D. Wadkar
Dr.Bali R. Shinde

Sr. No.	Name of the Author	Title of Paper	Page No.
19.	डॉ.मर्ली मामून सालह शेख	हिंदी भाषा, संस्कृति और जीवन-दर्शन	~
20.	डॉ. बदाम एस. पी.	समकालीन आंतरराष्ट्रीय संबंध आणि भारताचे अलिप्ततावादी धोरण	81
21.	डॉ. एम.डी.कच्छवे	कृषी पर्यटन : महत्त्व, आवश्यक सुविधा,फायदे आणि अडचणी	84
22.	डॉ.मोहन मिसाळ	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यात स्त्रियांचे योगदान	89
23.	डॉ.एस.एस.मठवाले	भारतीय महिलांची ऐतिहासिक स्थिती व मानवी हक्क	92
24.	प्रा.डॉ. बी.आर.शिंदे	लोकशाही व्यवस्थेत संविधानाचा आत्मा	95
25.	प्रो.डॉ. मा. द. सोनवणे	आंबेडकरवादी कार्यकर्ते : एक दृष्टिकोन	100
26.	डॉ.सुभाष दौलतराव दमाने	भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण 2020 : एक चिकित्सक अभ्यास	105
27.	डॉ. प्रो. डी. बी. कुलकर्णी	मीडिया में हिंदी भाषा का प्रयोग और परिवर्तन	111
28.	डॉ वडचकर शिवाजी	नारी विमर्श की संकल्पना	114
[illegible]	प्रा.सखाराम बाबाराव कदम	मराठी ग्रामीण कवितेची भाषा व वैशिष्ट्ये (कालखंड १९९० ते २०१०)	118
[illegible]0.	डॉ. सविता शिवनाथ झुंजारे	संयुक्त राष्ट्र संघटना सिद्धांत आणि स्वरूप	124
31.	कु इवरे संजीवनी शिवाजी डॉ. सोळंके नवीन केशवराव	आदिवासींच्या भाषिक समस्या	129
32.	डॉ वाकनकर गोविंद बन्सीधरराव	शारीरिक शिक्षणआणि खेळात योगाचे फायदे	132
33.	डॉ. मारोती बालासाहेब भोसले	मराठी भाषा: संधी व आव्हाने	136

Late Ramesh Warpudkar ACS College Sonpeth Pin-431516 Ta.Sonpeth Dist.Parbhani

नारी विमर्श की संकल्पना

प्रा डॉ वडचकर शिवाजी
के रमेश वरपुडकर कॉलेज सोनपेठ जि.परभणी
sayaliswapnilwsa@gmail.com

भारतीय जीवन में शुरू से अब तक नारी के प्रति दृष्टि का सच्चा लेखा जोखा उपन्यास, कहानी और कविता में मिलता है। इसकी लंबी परंपरा है। हजारों साल पहले जब हमने लिपिक आविष्कार भी नहीं किया था। तब जो रचा जाता था वह मौलिक होता था। हम उसे मौखिक ही दूसरों तक पहुंचा देते थे फिर दूसरी पीढ़ी को यह पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरा चलती गई ।उन दिनों नारी - पुरुष का शारीरिक भेद तो मानते थे परंतु और किसी प्रकार का अंतर नहीं था। समाज में नारी- पुरुष का समान भाव ही हमें सदियों तक स्वस्थ समाज बने रहने में सहायक रहा । परंपरा में जो मूल्य हमने स्वयं बने बनाये वे क्रमशः बिखरते गए । वह विघटन हमारे समाज को दुर्बल करता गया। इस प्रकार मानवीय जीवन में अंतर आता गया ।हमारी पारंपरिक समाज व्यवस्था में भी क्रमशः परिवर्तन आता गया कुछ मूल्य टूटे कुछ, मूल्य सुधरे, कुछ स्थाई बनकर आज भी समझ में चमक रहे हैं। नारी के प्रति दृष्टि में यही उतार चढ़ाव हमेशा लगा रहा । इसमें ज्यादा प्रभाव विदेशी आक्रमणों और पर्यटकों का रहा। शासन ने जोर जबरन परिवर्तन कराया। इस तरह समझबूझकर शांति से नए मूल्यों का रूप प्रस्तुत कर परिवर्तन की धारा स्पष्ट की है। स्वदेशी परदेसी परतंत्र में सबसे ज्यादा तनाव नारी ने भोग है।

हमारे भारतवर्ष में मानव चिंतन ही रहा है। उसका निर्माण, विकास, दिशा निर्देश आदि विभिन्न बातों में मनुष्य की चर्चा हुई । बाद में अनेक कारण आते गए और यह कार्यक्रम में उग्र भी हुआ। इसमें असमानता का भी प्रादुर्भाव हुआ। इस प्रकार समाज में स्थित विषम बनती गई ।नारी के प्रति पूरा दृष्टिकोण एक समय नकारात्मक हो गया । पूरा समाज तो कभी भी दो भागों में नहीं बंटा, पर चिंतन दिखने लगा ।यहां तक की विभिन्न सभ्यताओं में भी नारी के प्रति दृष्टि विभिन्न हो गई ।आगे चलकर इसी आधार पर नारी चिंतन भी भिन्न-भिन्न रूप लेकर हमारे सामने आता है ।भारतीय दृष्टि में नारी एक मूल्य है ।तो पाश्चात्य जगत में नारी एक वस्तु है । इस प्रकार नारी विमर्श एक प्रकार की चिंतन धरा है। वैसे नारी विमर्श यह शब्द पश्चिम में "Feminism " का हिंदी पर्याय है ।किंतु पूर्व और पश्चिम में नारी को लेकर भिन्न दृष्टि है । वह नारी किसी परंपरा को नहीं तोड़ वर्तमान से विद्रोह कर रही है। भारत में हजारों वर्षों की रुढियों, परंपरा और प्रचलन को तोड़ नया कुछ करने की बात करती है, मानो वह नारी अपनी अस्मिता का बोध लेकर अपनी मुक्ति की तरफ बढ़ रही है। पश्चिम की विद्वान इंस्टेल फ्रडमेन ने नारी विमर्श को इस रूप में व्यक्त किया है।

"Feminism is a belief that although women and men are inherently of equal worth most ties privilege men as a group.As aresult social movements are necessery to achive political equality between women and men. With the understanding that gender always intersects with other social heirarchies".

अर्थात श्री और पुरुष समान है ।किंतु अधिकांश समाजों में पुरुष को अधिक महत्व दिया जाता है ।अंतः स्त्री पुरुष समानता के लिए सामाजिक आंदोलन जरूरी है । क्योंकि लिंग आधारित अंतर अन्य सामाजिक परंपराओं में प्रवेश करता है। तो संक्षेप में मिलिसेंट ग्रेरेट रहती है

"Faminism has as its goal give every women .The oppotortunity of lucaming the uest that her natural facuslties wake her capablilties".

नारी विमर्श यह अत्यंत गंभीर और नाजुक विषय है। इस विषय को लेकर हमारे समाज में कुछ परिवर्तन जरूर हो रहे हैं ।एक तरफ वैचारिक दर्शन है, तो दूसरी तरफ नई चेतना का प्रसंग है ।तीसरे स्तर पर वह लेखन जहां रचनाकार की कलम चलती है। वह क्या सोचता है, क्या करता है, कैसे अपनी भाषा में व्यक्त करता है। रचनाकार अपने स्तर पर उसे सोचता है, यानि कहने का मकसद यह है कि यह धरातल नारी को अलग-अलग तरह से केंद्रित करते हैं। हर एक के अपने-अपने अनुभव भिन्न-भिन्न हुआ करते हैं ।यहां नारी विमर्श को लेकर ढेरों प्रश्न सामने आ जाते हैं।

पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों के बनाए नियम, उनका वर्चस्व, स्त्री की अपनी निरीहता, वह अपने को इस जकड़न से ,रूढ़ियों से , विपरीत परिणाम से निकलने की कोशिश नहीं करती। अर्थात स्त्री के स्वभाव को समझने के लिए स्त्री विमर्श महत्वपूर्ण कड़ी है । यह न कोई विचारधारा है, ना कोई पश्चिम का संस्कार है, आज के बदलते समय के अनुसार हमे सोचने की जरूरत है । यह समय कुछ परंपरा से मुक्त होने का है, मुक्त होना यांनी अपनी संस्कृती को भूलना नही है । एक संतुलनात्मक लचिला पण आधुनिक सोच ही मुक्त होना है। जो हमे नारी विमर्श मे देखने मिलती है। जब भी हम रिस्तों को लेकर सोचते है, तो केवल पती-पत्नी के रूप मे ही ।बल्की यहा इनके अलावा अन्य भी रिश्ते हैं, परिवार में बहन ,बेटी जेसा रिश्ते इस समाज के हर वर्ग से नारी का तार जुडा हुआ हैं। ये प्रेम रस हमे खुली आखों से सब ओर दिखाता है ,जोडता भी है और भरता भी हैं ।इसी में एक प्रेमिका रूप भी हैं यहा प्यार और संबंध की चर्चा नारी विमर्श को सही दिशा देता हैं। समाज मे स्त्री का स्थान क्या है, उसका समाज मे सोषणहोता है ,या सोशण पती से हो सकता है ,परिवार मे हो सकता है। उसे प्रकार प्रेमी से भी हो सकता है ,परिवार में हो सकता है। परिवार से बाहर नोकरी प्रशासन ,व्यवसाय करणे मे समाज मे जब स्त्री आती है, वहीं पर भी उसे सोशण का सामना करना पडता है। इस सोशण की पीडा अस्मिता का संघर्ष है। जो नारी विमर्श का एक प्रमुख प्रेम कारण हो सकता है। उसकी इच्छा के विरुद्ध एक दृष्टी भी व नही सह पाती यहा नारी का विद्रोह संघर्षरत रूप ही नारी विमर्श को बढावा देता है।

नारी विमर्श का मुद्दा उतना आवश्यक नही, जितना जागृती का आवश्यक है। यहां आधुनिकता संतुलित है। नारी से जुडी कुंठा है ,समस्या है, उसे खुलासा करे, मार्ग स्पष्ट करे। यह सभी नारी विमर्श के अंतर्गत आता है।

नर और नारी समाज मे समान अधिकारों के हकदार है। किंतु पितृसत्तात्मक समाज लिंग के आधार पर नारी को उनके अधिकार में वंचित रखता है । परिणाम स्वरूप नारी हशिये पर रहने के लिए बाते हो गई है। इस असमानता ओं के खिलाफ तथा स्त्रियों के अधिकार प्राप्ति के लिये किये जानेवाला संघर्ष नारीमुक्ती आंदोलन या नारीवाद होता है ।नारीवाद वह सिद्धांत हे, जो सभी क्षेत्र मे नारी को प्रमुख पुरुष के समान अधिकार और अवसर की मांग करता है ।हम देखते है की सभ्यता की सुरुवाती दौर में, चाहे वह जहा की भी हो, परिवार का केंद्र नारी ही था। वह अपने परिवार के मुखिया थी, आदिम समाज मे वंशानुक्रम ओर उत्तराधिकारी माता या नारी के पक्ष मे चलता था ,दुसरे शब्द मे सभ्यता के प्रारंभिक दौर में समाज निश्चित रूप से मातृसत्ताक था। लेकिन इतिहास के किसी मोड पर वह पितृसत्तात्मक समाज मे परिवर्तित हो गया। परिणामतः नारी धीरे धीरे अपनी अधिकारों से वंचित होने लगी जैसे जैसे पितृसत्तात्मक व्यवस्था सशक्त होने लगी वैसे वैसे स्त्रीयों के जीवन भी समस्या और प्रतिबंधो से युक्त होने वाली भारत मे पितृसत्तात्मक समाज आपली सुविधा के अनुसार नारी को या तो देवी नहीं तो दासी के रूप मे देखना चाहता है। किंतु आश्चर्य की बात है कि दोनों रुपों में वह शोषण का शिकार है ।मनुस्मृति मे कहा हैं।

" यंत्र नार्यस्तु पुज्यतें रमन्ते तत्र देवता।:
यत्रैतास्तु,न पूज्यन्तें सर्वास्तन्नाफला क्रिया: ।"

कहकर नारी पूजा की बात कही है, तो दुसरे स्थान पर उसको किसी भी अवस्था मे स्वतंत्र न देने का प्रस्ताव है ।यथा

"पति रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने:
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र मर्हति।"

कहने का तात्पर्य यह है की भारत में नारी जीवन के इतिहास में काफी उतार-चढाव दिखाई देते है। प्राचीन काल मे उसका सन्मान होता था। मध्ययुग मे उसकी दशा अत्यंत दिन थी। आधुनिक युग मे शिक्षा के प्रसार ने उनको फिर से जागृत किया। स्वतंत्रता संग्राम में उनकी सक्रिय भागीदारी इसका सबूत है। समकालीन संदर्भात अपनी अस्मिता के रक्षा के लिए संघर्ष करने वाली नारी का नया रूप दृष्टव्य है।

वैदिक युग मे स्त्री- पुरुष की स्थिति का काफी हद तक समानथी। वैदिक युग में स्त्री शिक्षा का प्रसार था किंतु केवल प्राथमिक शिक्षक होते हुए दर्शन ,मिमांसा जैसे विषयोंपर भी व्याप्त था। वैदिक युग की तुलना मे मध्येकाल मे नारी की स्थिती मे काफी गिरावट आई थी। इस समय और तुरकों के आक्रमण का सबसे बडा दुष्परिणाम नारी को जिल्हा पडा नारी कों झेलना पडा । नारी को जीवन की भूमिकाओं को निभाते समय केवल' भोग विलास की वस्तू 'मात्र माना गया था।

नारी जागरण और स्वतंत्रता संग्राम :

भारतीय इतिहास में हम देखते है ,की उन्नीसवी शताब्दी का उतरार्ध ओर 20 वी शताब्दी का पूर्वार्ध नारी जागरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। 19 वी शती चेतना के उदय के लिये प्रसिद्ध है। 19वी सदी को स्त्रियों की शताब्दी कहना उचित होगा। क्योंकि इस सदी मे सारी दुनिया मे उनकी अच्छाई- बुराई ,प्रकृती, क्षमतायें गर्मा गरम बहस का विषय थे । युरोप में फ्रान्सी क्रांति ओंर उसके बाद भी स्त्री जागरूकता का विस्तार होना सुरू हुआ और शताब्दी के अंत तक इंग्लंड फ्रान्स जर्मनी के बुद्धी जिवियोंने नारीवादी विचारों को अभिव्यक्ती दी । "19 वी सदी के मध्य तक ऋषी सुधारको के लिए महिला प्रश्न एक केंद्रीय मुद्दा बन गया था । जबकि भारत मे खास तौर पर बंगाल और महाराष्ट्र मे समाज सुधारकानें स्त्रिया मे फैली बुराईयों पर आवाज उठाना शुरू किया।"

हिंदी साहित्य के आदिकाल की सामाजिक स्थिती की समीक्षा करते हुए गोपाल शर्मा ने ।'दिनेश' लिखते है "नारी भी भोग्या मात्र रह गयी थी। वह क्रय विक्रय एवं अपहरण की वस्तू बनती जा रही थी।------- सती प्रथा भी इसी समय के समाज का एक भयंकर अभिशाप थी । फलत: सामान्य जाति कि नारी के लिए पुरुष का जीवन और मृत्यू दोनो ही भयंकर घटना बन जाते थे।" प्रस्तुत कथन से लगता है की आधिकालीन साहित्य मे नारी का भोग्यारूप ही अधिक चित्रीत होता था। वज्रयान धर्म मे तो मोक्ष प्राप्ति के लिए श्री सेवन अवश्य अंग था ।रासो काव्य मे और विद्यापति की रचना मे नारी का प्रेयसी रूप ही अधिक वर्णित है।

हिंदी की कृष्ण भक्ति कवित्री मीरा का स्थान स्त्री विमर्श में आज भी महत्वपूर्ण है। पितृसताक की व्यवस्था को ठुकराने का प्रयास मीरा के क्रियाकलापों में देखा जा सकता है । पति की मृत्यु के बाद सती होने के लिए वह तैयार नहीं हुई । विधवा वेश पहनने को भी वह तैयार नहीं हुई। श्रीकृष्ण की मूर्ति के सामने नाचती, गाती रहे। राजमहल छोड़ने का उसका इरादा भी उसके विद्रोह व्यक्तित्व का परिचयक है। मीरा के इस प्रतिरोध और विद्रोह के कारण सुकुमार मिश्रा जी इन्हें समकालीन स्त्री विमर्श का भागीदार मानते हैं " वस्तुत: मीरा हमारी समकालीन है और चल रहे स्त्री -विमर्श की भागीदार है ।अपने उसे प्रतिरोध का तथा विद्रोह के नाते जो उन्होंने अपने ऊपर लगाई गई पाबंदियों के खिलाफ किया। वे स्त्री विमर्श में इसलिए हमारे साथ है की सामंती जकड़बदी के बीच आपकी प्रेम पिपासा की उन्होंने निष्कुंठ अभिव्यक्ति की ।उनके विद्रोह का संबंध है ,लोक,राजपरिवार तथा संबंधियों द्वारा उन्हें दी गई यातना से उन पर थोपी गई पाबंदियों में जिसने मीरा अमान्य किया । यहां तक की राजभवन को लात मार कर वे उसे बाहर आ गई। ।" अपने नारी व्यक्तित्व के अपनी रचनाओं में उन्होंने प्रकट करने का प्रयास किया है। हिंदी साहित्य में एक औरत द्वारा अपनी आत्माभिव्यक्ति का प्रयास निश्चित रूप से सर्वप्रथम होगा इस संबंध में सुकुमार मिश्रा का विचार प्रस्तुत है "निश्चय ही ,संत और भक्त तो वह है, परंतु उनके साथ-साथ एक औरत होने का एहसास भी उनमें बरकरार रहा है ।उनके पदों में संत और भक्त होने के साथ उनके औरत होने लाचार और निरीही औरत होने की पहचान भी जुड़ी हुई है। वस्तुत औरत होने का वह एहसास ही मीरा को हमारे समय के स्त्री विमर्श से जोड़ता है। या औरत मीरा में बराबर जिंदा रही है मीरा ने उसे विचार के स्तर पर और संस्कार के स्तर पर अपने में शिद्दत से जलाए रखा है। जितना सच मीरा का संत या भक्त होना है, उनका औरत होना भी उतना ही बड़ा सच है।"

यह बात निर्विवाद सत्य है कि रीतिकाल में काव्य का मुख्य रस श्रृंगार था। राजश्रित कभी अपने आश्रय दाताओं को तृप्त करने के लिए ही काव्य सृजन करते थे । इस प्रकार के साहित्य में स्त्री का स्वरूप भोग्य के अलावा और कुछ होने की गुंजाइश नहीं थी । रीतिकाल के कवियों की नई संबंधी दृष्टि के बारे में डॉक्टर महेंद्र कुमार ने कहां है " वास्तव में नारी के प्रति कवियों की दृष्टि सामंतिय रही है ।ये उसे पुरुष के समकक्ष समाज की चेतन इकाई अथवा पुरुष का अर्ध्दांग न समझकर भोग्य संपत्ति के समान उसे भोग का मात्र उपकरण समझते हैं ।इनके लिए उनकी समस्त चेष्टाएं चेतन प्राणी की काम- भावना की अभिव्यक्ति न होकर पुरुष की उपभोग्य वस्तु की श्री वृद्धि मात्र है। इतना ही नहीं, वह मानते हुए भी की नारी में पुरुष की अपेक्षा काम की मात्रा अधिक होती है ,काम की अृतप्ति के कारण हुए उसके विरह तज्जन्य व्याधियों के प्रति मानव- सुलभ सहानुभूति के स्थान पर इनमें अपेक्षा अथवा कौतूहल का भाव ही अधिक रहा है ।"

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में नारी के प्रति दृष्टि थोड़ी परिवर्तित लगती है ।स्त्री शिक्षा का प्रसार, बाल विवाह, विधवाओं के दुर्दशा आदि विषयों को लेकर कविताएं लिखी गई और नारियों की स्थिति पर सहानुभूति प्रकट की गई ।द्विवेदी

युगीन कवियों ने विधवाओं के कष्टमय जीवन ओर शिक्षा विभिन्न नारी की दुर्दशा जैसे विषयों को लेकर कवियों ने काव्य लेखन किया है। मैथिलीशरण गुप्त ने यशोधरा, साकेत, विष्णु प्रिया, जयद्रथ वध आदि रचनाओं में नारी जीवन की दैनिक स्थिति का अंकन किया है। यशोधरा की पंक्तियों में नारी के प्रति सहानुभूति प्रकट हुई है।

"अबला जीवन हाय !
तुम्हारी यही कहिनी
आंचल में दूध और
आखों में पानी ।"

हिंदी साहित्य में नारी जीवन को लेकर पहली बार समग्रता से लेखन करने का श्रेय महादेव वर्मा को जाता है ।विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हुए महादेवी ने ।'हमारी श्रृंखला की कड़ियां 'नामक शीर्षक के अंतर्गत नारी जीवन से जुड़ी समस्याओं को बड़े गौर से लिया है। इसमें एक नारी ने नारी समस्या को लेकर कलम चलाते समय नारी घर और घर के बाहर की भूमिका, आर्थिक स्वतंत्रता और नारी, वेश्या जीवन, नए दशक में महिलाओं का स्थान युद्ध और नारी जैसे विषयों के बारे में उन्होंने अपना विचार प्रकट किया है ।भारतीय नारी की स्वतंत्रता के बारे में महादेव वर्मा का कथन उल्लेखनीय है " उनके अनुसार पुरुष स्त्री का शत्रु नहीं है पुरुष से जय प्राप्त करना भारतीय स्त्री का लक्ष्य नहीं है उनका लक्ष्य मात्र अपने अस्तित्व की स्थापना है । " वह लिखते हैं "हमें ना किसी पर जय चाहिए , न किसी से पराजय न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी का प्रभुत्व । केवल अपना वह स्थान वे विस्तृत चाहिए जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परंतु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग बन नहीं सकेगी। हमारी जागृत और साधन संपन्न बहाने इस दिशा में विशेष महत्वपूर्ण कार्य कर सकेगी, इसमें संदेह नहीं है।"

केवल हिंदी काव्य ही नारी विचारों से प्रभावित है ऐसी बात नहीं, हिंदी उपन्यासों में नारी का चित्रण हमेशा युग के अनुरूप हुआ है। हिंदी के प्रारंभिक नवजागरण वाले उपन्यास में स्त्री शिक्षा, और विधवा विवाह तथा बाल और वृध्द विवाह का विरोध इस उपन्यासों में नारी केंद्रित उपन्यासों का मुख्य विषय रहा है । प्रेमचंद के समय नारी जीवन के अनेक पहलुओं का यथार्थ चित्रण हिंदी उपन्यासों में हुआ है। नारी-जीवन को कष्टमय बनाने वाले तथ्यों के विरुद्ध इस समय के उपन्यासकारों ने आवाज उठाई ।स्वतंत्रञ्योत्तर उपन्यासों में अस्तित्व वाद का स्पष्ट प्रभाव है । नारी -जीवन की कुंठा, पीड़ा ,निराशा ,अकेलापन आदि का चित्रण इस समय के उपन्यासों में हुआ है। 1980 के बाद के उपन्यासों में नारीवादी आंदोलन की गूंज सुनाई देती है।

संक्षिप्त: में हम देखते हैं कि नारी मुक्ति संघर्ष का एक लंबा इतिहास है । इस लंबे संघर्ष से गुजरते भी है नारी आज की स्थिति में पहुंच गई है। वर्तमान समय में भी उसका संघर्ष जारी है। क्योंकि आज भी नई उतना स्वतंत्र नहीं जितना स्वतंत्र होना चाहिए ।

ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

संदर्भ ग्रंथ सूची

1)केंब्रिज डिक्शनरी
2) आॅक्सफर्ड डिक्शनरी
3) www.oup.com
4)मनुस्मृति - व्याख्याकार - पंडित श्री हरगोविंद शास्त्री श्लोक 50
5)वही श्लोक 3
6)स्त्री संघर्ष का इतिहास- राधाकुमार,पृ 23
7)हिन्दी साहित्य का इतिहास डाॅ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' संपा - डाॅ.नगेंद्र पृ 56
8)स्त्री विमर्श मे मीरा-शिवकुमार मिश्र वाडमय जुलाई दिसंबर 2007पृ 30
9)हिन्दी साहित्य का इतिहास डाॅ.महेन्द्रकुमार संपा .डाॅ.नगेंद्र पृ 306
10) मैथिलीशरण गुप्त यशोधरा पृ 12
11)महादेवी वर्मा महादेवी साहित्य समग्र 3 पृ 304

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Senpath Dist. Parbhani